फरवरी १९४०] # देश-दर्शन [माघ १९९६

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या ९] ## मिस्र—२ [वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)



यात्रा

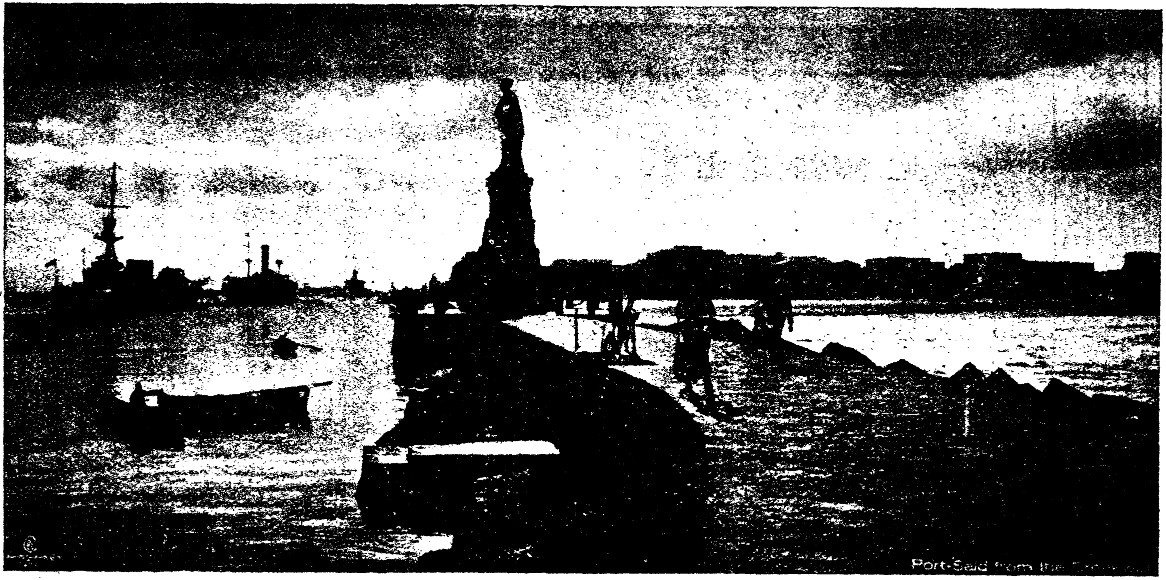
यरूशलम से क़ाहिरा

३० मई को यरूशलम से प्रस्थान कर दिया। रेल-गाड़ी सवेरे लगभग ८ बजे छूटी। स्टेशन पर काफी भीड़ थी। समय से पहिले आने वाले मुसाफिर अक्सर अपने जूतों पर पालिश कराना पसन्द करते हैं। मोची को इससे बड़ी आमदनी होती है। वह उसी शान से रहता है। जिस तरह से रेलवे कर्मचारी रहते हैं। कुछ ही देर में यरूशलम नज़र से ओझल हो गया। यरूलशम की भूरी, सूखी पहाड़ियाँ भी पीछे छूट गईं। निचले ढालों और घाटियों में स्थित खेतों में जौ कट रहे थे। कुछ खेतों में ज्वार लहलहा रही थी। कहीं कहीं छोटे छोटे पेड़ मिलते थे। रेलवे लाइन की मरम्मत करने वाले मज़दूर सब कहीं लम्बे अरबी थे। पर उनसे काम लेने वाले बाबू लोग यहूदी योरुपीय पोशाक में रहते हैं लेकिन अरबी लोग पुरानी चाल के ढीले ढाले कपड़े पसन्द करते हैं। लिडा या लुढ जंकशन पर गाड़ी बहुत देर ठहरी। यहाँ से एक लाइन यहाँ के प्रधान बन्दरगाह जाफा को जाती है। दूसरी लाइन उत्तर को ओर हैफा

को जाती है। पर हमारी गाड़ी भूमध्य सागर के किनारे किनारे दक्षिण-पश्चिम की ओर अलकन्तारा को बढ़ती है।

लिड जंकशन के आगे नारंगी, टमाटर और शहतूत के पेड़ बहुत मिले। यहां की नारंगी बहुत बड़ी और मीठी होती है। चार पांच नारंगियों में ही पेट भर जाता है। दाँत ज़रा भी खट्टे नहीं होते हैं। पर आगे बढ़ने पर हरियाली बहुत कम मिलती है। सब कहीं नमकीन रेगिस्तान है। कहीं कहीं समुद्र के दर्शन हो जाते हैं। समुद्र के पास होने के कारण इधर विकराल गरमी नहीं पड़ती है। गाज़ा से एक रास्ता बीरशबा होता हुआ मरासागर को गया है। भूमध्य सागर के किनारे पर बसे हुए शेख हसन नगर तक पक्की सड़क है। यहां से लगभग २५ मील की दूरी पर राफा रेलवे स्टेशन है। यहीं से मिस्र देश की सीमा आरम्भ होती है। पासपोर्ट की जांच गाड़ी में ही हो गई इसलिये कोई तकलीफ उठानी नहीं पड़ी। रेल भूमध्य सागर के किनारे किनारे चलती थी लेकिन पीले रेतीले और कुछ ऊँचे किनारे आड़ डालते थे। पर कभी कभी रेल की खिड़की से ही नीला पानी साफ़ नज़र आता था। कुछ दूर आगे चलने पर रेल के

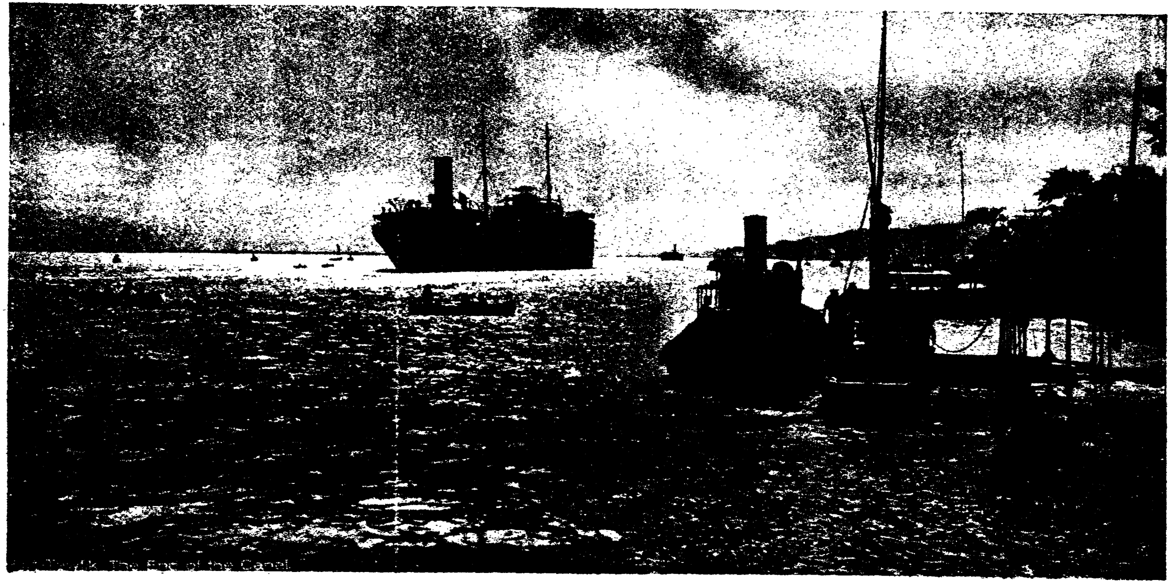
दोनों तरफ बालू थी। हवा उसे अक्सर गाड़ी में उड़ा लाती थी। कहीं कहीं झाऊ और सूखी घास भी दिखाई पड़ जाती थी। अल् आरिश के पास समुद्र एकदम दिखाई देने लगा। लाइन ऊँची ज़मीन पर थी। यहीं खजूर के बगीचों की हरियाली थी। स्टेशन के मकान अधपकी पीली ईंटों के बने थे। क्यारियों में ककड़ी और टमाटर के पौधे थे। मेगासिन स्टेशन के पास रेलवे लाइन फिर समुद्र के पास आ जाती है। पर भीड़ कहीं नहीं थी। शाम को लगभग ५ बजे कन्तारा स्टेशन पर रेलवे लाइन रुक गई। इसके आगे ही स्वेज़ नहर है। यहां जहाज़ बहुत ही धीरे धीरे चलते हैं। नहर को पार करने के लिये स्टीमर मिलते हैं। लेकिन गाड़ी से स्टीमर तक पहुँचने में घंटों लग जाते हैं। फासला तो कुछ भी नहीं है। लेकिन पासपोर्ट, चुंगी और पुलीस के लोग घंटों लगा देते हैं। सोना ले जाने वालों पर खास नज़र रहती है। यहीं सिक्का बदलने और खरीज बेचने वाले दलालों की भी भीड़ रहती है। नये आदमी को ठगने में ये लोग ज़रा भी कमी नहीं करते हैं। इसलिये यात्री को प्रतिष्ठित बैंक से ही आवश्यक खरीज ले लेनी चाहिये। मेरे पास भोजन का पूरा सामान था। बोझा मैं अपने हाथ से ही उठा लाया।



भूमध्यसागर के स्वेज नहर में प्रवेश करते समय फ्रान्सीसी इञ्जीनियर डिलासेप्स की पत्थर की मूर्ति दिखाई देती है। इसी इञ्जीनियर ने इस नहर को बनवाया था।



पोर्ट सईद (बन्दरगाह)



तौफीक बन्दरगाह । यहीं नहर समाप्त होती है ।



वेरो शहर का एक दृश्य





इसलिये मुझे खरीज की ज़रूरत न पड़ी। टिकट लेने के लिये मैंने अँग्रेज़ी पौंड के कुछ नोट यरूशलम में ही ले लिये थे। ये नोट मिस्र देश में भी ले लिये जाते हैं। स्टीमर रेलवे के ही हैं इसलिये उतराई अलग नहीं देनी पड़ती है। दूसरी ओर पश्चिमी कन्तारा है। यहाँ बड़ी चहल पहल रहती है। यहीं मिस्र देश के लिये फिर रेलगाड़ी मिलती है। पोर्ट सईद से इस्माइलिया तक मोटर की पक्की सड़क और रेल की सड़क स्वेज़ नहर के पश्चिमी किनारे से लगी हुई चलती है। रेगिस्तानी प्रदेश होने पर भी यह दृश्य बड़ा मनोहर है। इधर थोड़ी थोड़ी दूर पर बिजली की रोशनी और आबादी है।

स्वेज़ नहर खोलने का विचार अब से कई हज़ार वर्ष पहले ही मिस्र देश के प्राचीन राजाओं ने किया था। कुछ समय तक लगभग सवा लाख मज़दूर खोदने का काम करते रहे। पर फिर समय के हेर फेर से नहर बन्द हो गई। प्रसिद्ध ख़लीफा हारूनल रशीद ने भी विलायती बेड़े के डर से अधखुदी नहर बन्द करा दी। १७९८ ई० में नहर खोलने के विचार से नेपोलियन ने इस भाग की पैमाइश करवाई। लेकिन नहर खोलने का

असली काम १८५६ ई० में शुरू हो गया। फ्रांसीसी इञ्जीनियर लासेप्स ने १७६६ ई० में नहर तयार करदी। यह नहर लगभग १०० मील लम्बी है। इसकी गहराई ३३ से ४६ फुट तक है। कई जगह पर यह इतनी चौड़ी है कि जहाज़ एक दूसरे से गुज़र सकते हैं। लेकिन जहाज़ों को ६ मील फी घंटे से अधिक चलने की आज्ञा नहीं है। इसलिये पोर्ट सईद से स्वेज़ नगर तक पहुँचने में जहाज़ों को पन्द्रह घंटे लग जाते हैं। कभी कभी पक्की सड़क पर मोटर, नहर में जहाज़ और इस ओर रेलगाड़ी में दौड़ भी हो जाती है। कुछ ही समय में बेचारा जहाज़ पीछे रह जाता है। कभी कभी तो ऊंटनी सवार अरबी लोग भी जहाज़ को हरा देते हैं।

इस्माइलिया नहर के किनारे पर सबसे बड़ी नहर है। यहीं से रेलवे की एक शाखा केरो को जाती है। इधर रेलगाड़ी में बड़ी भीड़ हो जाती है। कन्तारा से ६ बजे शाम को चलकर रात के लगभग ११ बजे रेलगाड़ी केरो (क़ाहिरा) में पहुँची।

यहाँ स्टेशन पर बड़ी भीड़ थी। एक ओर कुली और दूसरी ओर होटलों के एजेन्ट नये मुसाफिरों को

तलाश में बहुत तेज़ी से इधर उधर चक्कर काट रहे थे। यहाँ होटल तीन तरह के हैं। सबसे सस्ते होटल झगड़ालू और गन्दे अरबी लोगों के हैं। सब से महँगे अँग्रेज़ी होटल हैं। मध्यम श्रेणी के होटल अधिकतर यूनानियों (ग्रीस देश वालों) के हाथ में हैं। मैंने यूनानी होटल (तौफीक हाउस) में रहना पसन्द किया।

केरो शहर बड़ा मनोहर है। यहाँ देखने योग्य इतनी चीज़ें हैं कि उनको देखने में कई दिन लग जाते हैं। सब से पहले ट्रेमगाड़ी पर सवार होकर मैं यहाँ के जगत्-प्रसिद्ध विशाल पिरेमिडों को देखने गया। ऊपर चढ़ने के लिये अलग टिकट लेनी पड़ती है। साथ में एक सहारा देने वाला गाइड (पथ प्रदर्शक) भी रहता है। इन्हें देखकर मनुष्य सचमुच दंग रह जाता है। इनके बनाने में लाखों ग़ुलामों ने वर्षों काम किया। दूर से ये कृत्रिम पहाड़ मालूम पड़ने हैं।

सबसे पहले मैं क्रिओप्स पिरेमिड पर चढ़ा। चढ़ते चढ़ते मेरे साथी का दम फूल गया। मुझे तेज़ी से चोटी पर पहुंचते देख उसने मेरी बड़ी तारीफ की और इनाम मांगा। उसने कहा जो लोग गाइड का बिना सहारा लिये हुए चोटी पर चढ़ जाते हैं बड़े भाग्यवान होते हैं।

चोटी पर पहुँच कर मुझे बड़ा आनन्द आया। भारतवर्ष से यहाँ तक पहुँचने में मैंने जो कुछ परिश्रम या व्यय किया वह वसूल सा हो गया। सदियों का इतिहास आँखों के सामने नाचने लगा। पर पिछली बातों से भी अधिक मनोहर आधुनिक दृश्य थे। जिन लोगों ने कुतुब मीनार से दिल्ली और यमुना जी का दृश्य देखा है वे यहाँ के आनन्द का कुछ कुछ अनुभव कर सकते हैं।

पिरेमिड की चोटी से मैं नील नदी की शान्त नीली धारा, सूखा नंगा मेकातम पहाड़, मीना गांव, शानदार मीना होटल, मुहम्मदअली सिटेडल (क़िला), मस्जिदों और घरों के असंख्य गुम्बदों का समूह, छुहारे के बगीचों को देखकर मैं मुग्ध हो गया। लेकिन ये सब चीजें विशाल रेगिस्तान के सामने उसी तरह तुच्छ थीं जिस तरह अपार समुद्र के बीच में कोई छोटा टापू हो।

बड़े पिरेमिड के पास ही विशालकाय स्फिंक्स है। इसका शरीर ५० गज़ लम्बा और २५ गज़ ऊँचा है।

केरो (क़ाहिरा) शहर में इतने अधिक दर्शनीय स्थान हैं कि यहाँ कई हफ्ते लाभ के साथ भ्रमण करने में लगाये जा सकते हैं। यदि संगीत, सिनेमा, थियेटर

नाचघर, खेलघर और बैंड को देखा जाये तब तो वहाँ मनुष्य बड़े आनन्द से जीवन बिता सकता है। इन सब का वर्णन करना कठिन है। पर यहाँ के कुछ स्थानों का उल्लेख करना आवश्यक है।

शहर के दूसरी ओर पुल के पार गिज़ा में मिस्र देश का सब से बड़ा चिड़ियाघर है। यहां न केवल अफ्रीका महाद्वीप के वरन् संसार भर के प्रसिद्ध और अनोखे जानवरों का अपूर्व संग्रह है। यहाँ हाथी, सिंह, चीता, हिरण, बन्दर, जिराफ, ज़ेब्रा, दरियाई घोड़ा, शुतुर्मुर्ग के अतिरिक्त ध्रुव प्रदेश के भालू और सील आदि ठंडे देश के जानवर देखे जा सकते हैं। सील को देखने के लिये यहाँ बड़ी भीड़ लगी रहती थी। बगीचे के नौकर जब बाल्टी से कुछ मछली निकाल कर सील के तालाब में फेंकते तो सील तेज़ी से तैर कर गर्दन ऊँची करती और विचित्र ढंग से चिल्लाती है। जिराफ की गर्दन इतनी ऊँची थी कि उसे दर्शकों के हाथ तक गर्दन नीचे लाने में असुविधा होती थी। उसे तो पेड़ों से एकदम पत्तियाँ चट करने में ही आनन्द आता था। शिम्पाञ्जी बड़ा सुहावना लगता था। पूरा एक दिन मैने यहाँ के जानवरों के देखने में लगाया।

कैद में होते हुये भी ये जानवर अपनी अपनी प्रकृति का पूरा परिचय दे रहे थे।

मिस्र देश का प्राचीन गौरव समझने के लिये यहाँ के अजायबघर में जाना आवश्यक है। वह अजायबघर सोमवार और शुक्रवार को बन्द रहता है परन्तु अन्य दिनों में सबेरे ६ बजे से शाम के ४ बजे तक खुला रहता है। अजायब घर का विशाल दुमंजिला मकान इस तरह बना है कि इसमें आग लगने का डर नहीं है। इस अजायब घर में अब से सात आठ हज़ार वर्ष की पुरानी चीजें रक्खी हैं। इन सब का वर्णन करना असम्भव है। यहाँ रक्खी हुई चीज़ को समझने के लिये मिस्र देश की पुरानी चित्र-लिपि का अभ्यास कर लेना चाहिये। यदि इतना समय न हो तो अजायब घर के टिकट लेते समय एक केटलाग (सूची) मोल लेना चाहिये। अनुभवी गाइड से भी काम चल सकता है।

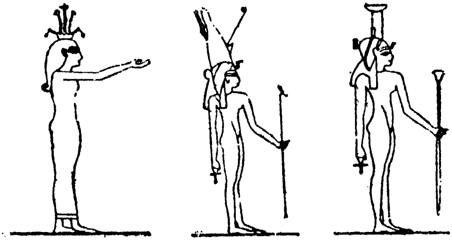
प्राचीन मिस्री लोग बहुत से देवताओं को पूजते थे। उनके मतानुसार देवी और देवता लोग पशु-पत्ती, और दूसरे पदार्थों का रूप धारण कर लेते थे। आकाश, पाताल पृथ्वी नदी आदि में प्रेतात्माओं का निवास



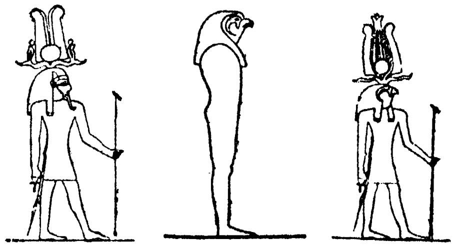
था। कुछ देवता लोग मनुष्यों के शुभचिन्तक थे। कुछ मनुष्यों का अशुभ करने में ही मग्न रहते थे। प्रत्येक नगर और गांव का इष्ट देव अलग होता था। पशु-पक्षी आदि का रूप धारण करने पर भी देवता लोग मनुष्यों की भाषा बोल सकते थे।

जिन दिनों मिश्र देश में शक्तिशाली राज परिवार राज करते थे। उन दिनों मिश्री लोग प्रकृति की शक्तियों की उपासना करते थे। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र प्रकाश और अन्धकार आदि उनके उपास्य देव थे। उनका विश्वास था कि ये शक्तियाँ पशु-पक्षी आदि का शरीर धारण कर सकती हैं। सूर्य और सूर्य सम्बन्धी देवता बाज (चील्ह) के रूप में दर्शन देते थे। मुत देवता गिद्ध का रूप धारण करते थे। रुनेमू, आमेन और ओसीगी देवताओं का सूचक होने से मेष (मेढ़ा) पवित्र माना जाता था। तेमू होरस, आकर आदि देवताओं ने सिंह को पूज्य बना दिया था। बैल और आपि म्नोविस आदि देवताओं का चिन्ह था। हाथोर आदि देवतों के कारण गाय पवित्र मानी जाती थी। बस्त देवतों का चिन्ह बिल्ली थी। अनूबिस, अपुआत आदि देवता शृंगार का रूप धारण करते थे। थोथ देव का मुँह कुत्ते के समान था।

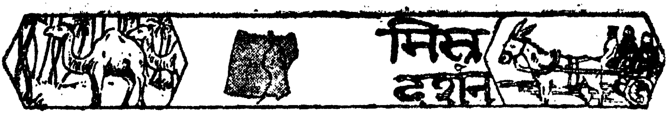
हाथोर देवता ने मगर को पवित्र बना दिया था। सेकर देवता का चिन्ह सर्प था। इसी प्रकार और देवताओं के चिन्ह भी अलग थे। आगे प्रधान मिश्री देवताओं के चिन्ह दिये जाते हैं।



मर्ट बाद की देवी   मुत का देवी   नेपथिस देवी



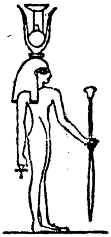
टाह संकर देव   क्वेभ सेनफ   रा-हरमाचिस

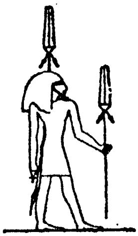



खेपेरा देव

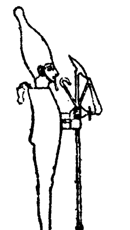

खनेमू देव


खेनसू देव

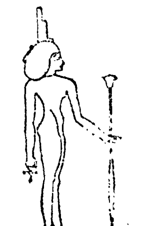

नेपथिस देवी


नेफर टेमू देव

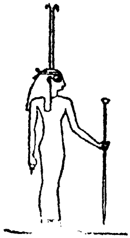

नेखेवेट देवी


ओसीरिस देव

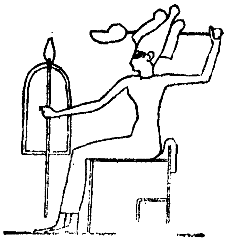

सेरापिस


इसिस देवी

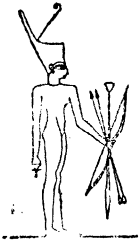
देश दर्शन



अनित देवी



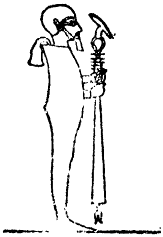
आन्थात देवी



नीथ देवी



नुत देवी



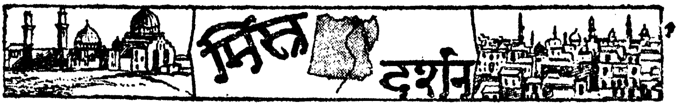
टाह देव

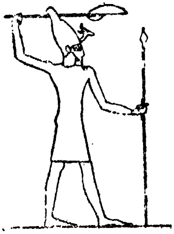


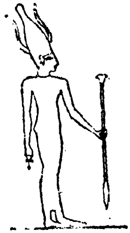
हथोर देवी



केटेश देवी




रेश्यू देव

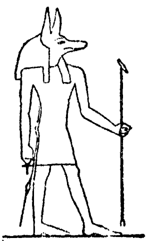

साहेत देवी

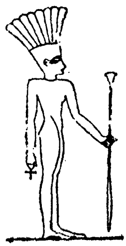

सेब देव


सेबेक देव


शेशेटा देवी


शेकर देव

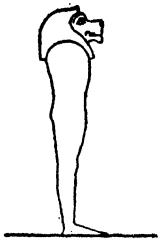

अनूबीस देव


आंक्वेट देवी


आसारीस

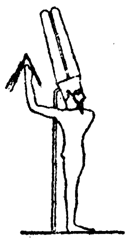
देश दर्शन

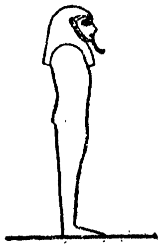

हापी देव

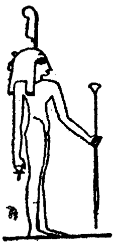

होरस का पुत्र


होरस


आमेन रा

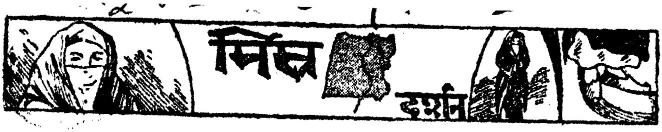

मीन देव


आमसेट

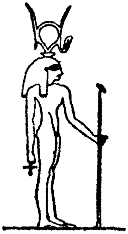

मात देवी

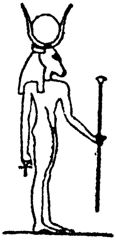

मेन्हेत देवी

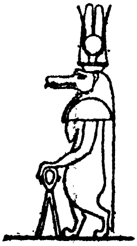

मेन्थुरा देव




हेरूपा खान


हथोर देवी


हथोर देवी


टा उर्ट देवी


टेट

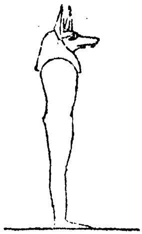

टेहूटी देव


अटेमू देव

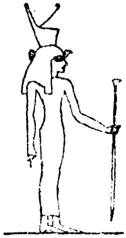

बेसू देव


बेस देव

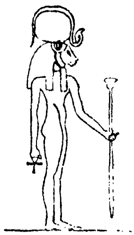
देश दर्शन



नुआमुतेफ



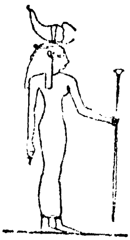
युआचिट देवी



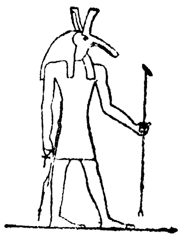
नट हेका देवी



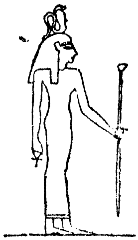
सेखेत देवी



सरक्वेत देवी



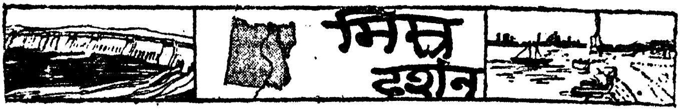
सेत देव



रेंवेत देवी

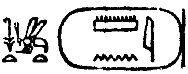


रेश्यू देव

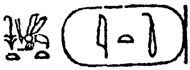


मिस्र देश में कई वंशों के राजा बड़े शक्तिशाली हुये। इन राजाओं के नाम एक अंडाकार घेरे के भीतर चित्र-लिपि में प्राचीन दीवारों और अन्य स्थानों में अंकित मिले हैं। ये अंडाकार घेरे पत्थर पर काट कर बनाये गये। फिर उनके भीतर पत्थर को काटकर उपयुक्त चित्रों द्वारा राजाओं के नाम लिखे गये। किसी किसी व्यक्ति के पाँच राजसी उपाधियां (शाही खिताब) थीं। प्रधान राजवंशों के राजाओं के नाम चित्रलिपि में नीचे दिये जाते हैं।

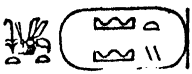
पहला राज्य वंश



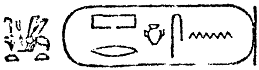
मेना



अतेथ



सेमती

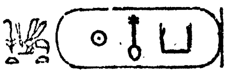


परअब सेन

तीसरा राज्य वंश



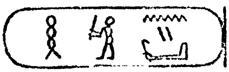
चीसर



नेफर का—रा



सूर्य का पुत्र



हूनी

चौथा राज्य वंश



सेनेफेरू



खूफू

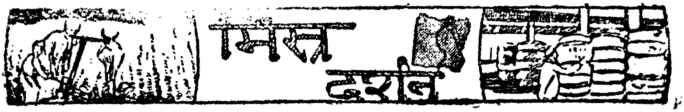


खा-फ-रा

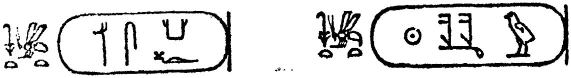


मेन का—रा

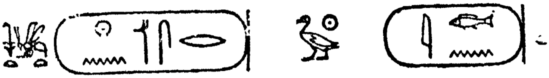
किसी देश का प्राचीन इतिहास इतना सुरक्षित नहीं रह सका जितना मिस्र देश का रहा है। अजायबघर में घुसते ही प्राचीन राजाओं और देवताओं की विशाल मूर्तियां अब से कई हज़ार वर्ष पुराना जीवन आप के सामने खड़ा कर देती हैं। कहीं मसाला लगे हुये शव (लाश) अब तक रक्खे हैं। प्राचीन मिस्री लोग एक ऐसा मसाला जानते थे जिसके लगाने से लाश हज़ारों वर्ष तक सड़ती नहीं थी। यही मसाला प्राचीन राजाओं की लाशों पर लगाया गया। फिर लाश कई परतों में लपेट दी गई। जिन जानवरों की लाशों पर मसाला लगाया गया वह भी देखने में ऐसे मालूम होते हैं मानों वे हाल ही में मरे हों।



पाँचवाँ राय वंश



उस्रकाफ साहु-उ-रा



उस्र-एन-रा सूर्य का पुत्र एन

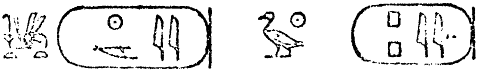


लेट-का-रा सूर्य का पुत्र अस्सा



उनास

छठवाँ राज्य वंश



मेरी-रा सूर्य का पुत्र . पेपी (१)



मरेन=रा सूर्य का पुत्र मेहटी एम साफ



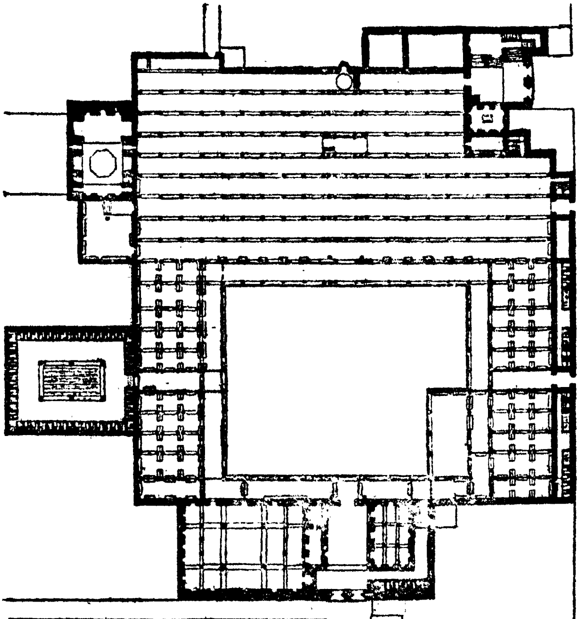
नेफ़र का-रा सूर्य का पुत्रा पेपी (२)

प्राचीन समय के बरतन, सोने चाँदी के आभूषण, ऐसी नावें जिसमें एक भी कील नहीं लगी थी। पूजा और शृंगार का सामान, सिक्के, यात्रा के साधन लड़ाई के हथियार, कपड़े, जूते, चित्र आदि इतने अधिक हैं कि उनको सरसरी तौर से देखने पर भी पूरा दिन लग जाता है।

केरो शहर के पूर्व की ओर ममलूक लोगों के पुराने मक़बरे भी देखने योग्य हैं। रास्ते में कई मस्जिदें मिलती हैं। लेकिन अल् अज़हर मस्जिद बहुत ही पुरानी और प्रसिद्ध है। यह मस्जिद ९७२ ई० में बनाई गई थी। यह इस समय भी दुनिया भर में सब से बड़ी इस्लामी यूनिवर्सिटी (विश्व-विद्यालय) है। इस समय कोई बड़ी नक्काशी का काम तो नहीं है, पर इसके संगमरमर के सीधे सादे खम्भे १००० वर्ष के पुराने होने पर भी ज्यों के त्यों खड़े हैं। इसके भीतर लगभग ८००० विद्यार्थी कुरान की शिक्षा ग्रहण करते हैं। वे चीन, जावा, हिन्दुस्तान, इरान, तुर्किस्तान, मरक्को आदि दूर दूर के देशों से आते हैं। पर उन सब का रहन सहन बहुत ही सादा है। कुर्सी, मेज़ का नाम नहीं है। सब लोग



चटाई पर बैठकर पढ़ते हैं। जहाँ दूसरी मस्जिदों में सन्नाटा छाया रहता है वहाँ अज़हर में बराबर चहल

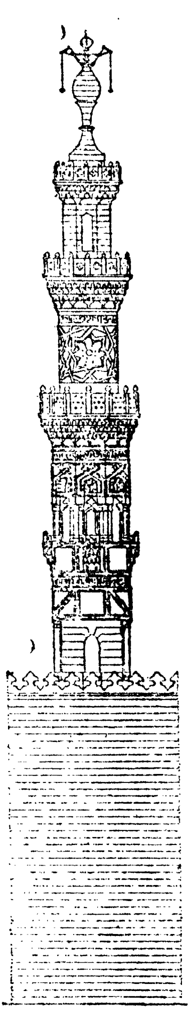


(संसार के सबसे बड़े मुसलमानी विश्व-विद्यालय अल् अजहर का मानचित्र)

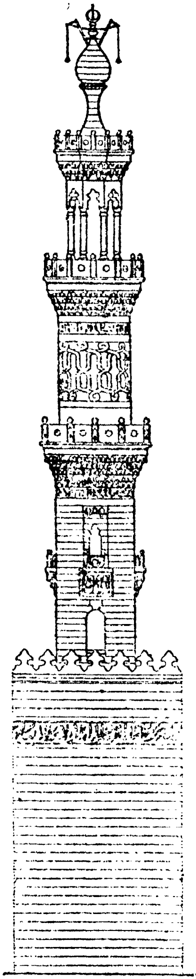
पहल रहती है। पर यहाँ के लोग भी आधुनिक विज्ञान से एक दम वंचित रह जाते हैं।

मुहम्मद अली का क़िला बहुत ही ऊँचे भाग पर है। ट्रैमगाड़ी बिल्कुल पास तक आती है। एक भाग में गोरे सिपाही रहते हैं वहाँ दर्शकों को जाने की आज्ञा नहीं है। पर दूसरे भाग में पहुँचने पर भी शहर और नील नदी का दृश्य बहुत अच्छा लगता है। बर्रों के छत्ते की तरह मकान पास पास हैं। पर मीनारें और बुर्ज़िया ऊँची उठी हुई हैं। शहर से कुछ मील की दूरी पर हेलियोपोलिस है। यही प्राचीन सूर्य—नगर था। आज कल यहाँ आलीशान इमारतों वाला नया नगर बन रहा है। यहाँ तक ट्रैम लगातार आती रहती हैं। यहाँ की ख़ुश्क हवा तन्दुरुस्ती के लिये बड़ी अच्छी है। लेकिन धूप के समय इधर छाया देने के लिये एक भी पेड़ नहीं है।

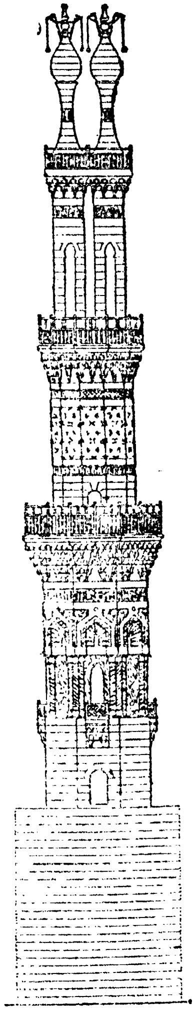
केरो शहर में कई बाज़ार हैं। किसी में बर्तन बनते और बिकते हैं किसी में सोने चाँदी के ज़ेवर बिकते हैं। कहीं फल और मेवा है। कहीं रोटी और अनाज की मंडी है। पर लाल पीला या हरा ठंडा शरबत बेचने वाला मधुर गीत गाता हुआ लोगों के प्यास सब कहीं बुझाता रहता है। वह अपना गाना मुफ़्त में ही सुनाता



क़ायत बे की मीनार



बरकूक की मीनार



अल् अजहर की मीनार

रहता है। लेकिन वह बिना धोये हुये एक ही गिलास से सब को शरबत देता है। इसलिये यात्री को सुरीली तान और चमकीले रंग से सावधान रहना चाहिये।

केरो के पार्क बहुत ही हरे-भरे और साफ रहते हैं। यहाँ पर शाम को लोगों की बड़ी भीड़ रहती है। बज़ारू औरतें काले कपड़े पहने हुये हर समय यहाँ पड़ी रहती हैं। बुरक़ा होने पर भी उनके चेहरे का ऊपरी आधा भाग खुला रहता है।

शहर से कुछ मील पर हल्वान है। यहाँ गंधक के जल का स्नान करने के लिये दूर दूर से लोग आते हैं। यह भाग बहुत ही साफ और खुला हुआ बसा है। यहाँ से नदी कुछ दूर है। एक ओर सुन्दर ऊँचा पार्क है।

१४ मील दूर होने पर भी यहाँ का सक्कारा पिरामिड अवश्य देखना चाहिये। पिरामिड स्टेशन से लगभग ३ मील दूर है। यहां पहुंचने के लिये गधे की सवारी मिलती है। मिस्र तथा अरब आदि अन्य रेगिस्तानी देशों में गधे की सवारी बड़ी इज्ज़त की सवारी समझी जाती है। मुझे सवारी की इतनी ज़रूरत नहीं थी जितनी राह दिखलाने वाले की। पर यहाँ की यात्रा

तब तक सफल नहीं समझी जाती जब तक मनुष्य गधे की सवारी न करे। गधे के मालिक अपने गधे को रंग बिरंगी मालायें पहनाते हैं और उसे बड़ी सजावट के साथ रखते हैं। मैंने स्टेशन मास्टर की सहायता से गधे वालों में से एक को चुना और किराया तय किया। उसने मेरे झोरे को अपने कंधे पर लटकाया और मुझे अपने गधे पर सवार कराया। वह अपनी विचित्र भाषा में गधे को आवाज़ लगाता था। गधा उसकी आवाज़ सुन कर अचानक दौड़ पड़ता। अचानक दौड़ने के कारण वहाँ के गधे दूसरे देशों के घोड़ों से भी अधिक डरावने हो जाते हैं। सक्कारा पिरामिड पहुँचने के पहले रास्ते में एक दो गाँव पड़ते हैं। एक गाँव के बाहर एक-दम खुले में देहाती बाज़ार लगा हुआ था। इस बाज़ार में काले कपड़े पहने हुये देहाती औरतें बहुत थीं। लेकिन वे शहरी औरतों की तरह बुरका डाले न थीं। ज्वार, ताज़े टमाटर, ककड़ी, भिन्डी के कई ढेर लगे हुये थे। एक जगह मिट्टी के बर्तन बिक रहे थे। एक दो कपड़ा बेचने वाले भी थे। एक जगह पर ताज़े बड़े बन रहे थे। यहाँ बड़ी भीड़ थी। मैंने अपने रास्ते के लिये टमाटर मोल ले लिये।

देश दर्शन

गाँव से कुछ ही दूर बाहर आने पर नील नदी की काली मिट्टी वाली पेटी का अन्त हो गया। इसके आगे बादामी रंग की रेतीली ऊँची ज़मीन थी। बालू उड़ उड़ कर अक्सर अच्छी ज़मीन को भी ढक लेती है।

सक्कारा पिरामिड ऊँचा तो काफी है पर वह कुछ टूटी फूटी दशा में है। इसके भीतर प्राचीन रँगाई और कटाई के बहुत अच्छे नमूने हैं। कुछ गाईड—प्रदर्शकों का कहना है कि यहाँ से भीतर भीतर बड़े शहरों को रास्ते गये हैं। पिरामिड का चक्कर लगाने में दो तीन घंटे लग गये। धूप बड़ी तेज़ हो गई। इसलिये फिर दूसरे रास्ते से लौटने की तयारी की गई। यह रास्ता एक दम सीधा था। इधर गाँव कोई नहीं था। मेरे गधे वाले को कभी कभी कोई जान-पहचान वाला मिल जाता था। अरब में इस प्रकार अकेले सफर करना बड़ा भयानक है। पर मिस्र देश में इस तरह का डर नहीं है। लेकिन देशाटन करने वाले यात्री को डर तो घर पर ही छोड़ देना चाहिये। साधारण सावधानी के बाद निर्भयता और साहस यात्री के सबसे बड़े रक्षक हैं। थोड़ी देर में हम लोग पक्की सड़क पर आ गये। इसके पास ही नहर

बह रही थी। नहर से रेल की लाइन लगभग आधी मील दूर थी। सड़क पर केरो के लिये मोटर लारियाँ आती रहती हैं। लारी के आने में कुछ देर थी इसलिये गधे वाले से अरबी और अँग्रेज़ी की खिचड़ी में गप्पें लड़ने लगीं। हम लोगों की बात चीत में अलग अलग शब्द वाक्यों का काम देते थे। गधे वाले ने कहा रेल और ट्रेम गाड़ी तो किसी काम की नहीं, इनका किराया बहुत सस्ता है। लारी की सवारी कुछ अच्छी है। पर हमारे गधे की सवारी सबसे अच्छी है। इसका किराया इन सब से कहीं ज्यादा है। केवल मालदार रईस लोग ही गधे की सवारी कर सकते हैं।"

जब मैंने नियत किराया दे दिया तो गधे वाले ने कहा कि यह सब दाम तो मालिक के हाथ में जायगा। मेरे लिये आप क्या देते हैं? मैंने चन्द पियास्टर (वहाँ के सिक्के) उसके हाथ में रख दिये। वह फिर बोला कि आपने मेरे मालिक और मुझे तो ख़ुश कर दिया लेकिन आप ने गधे को क्या दिया! गधे का हक अलग है। मैंने उसे ख़ुश रखने के लिये गधे के लिये भी चन्द पियास्टर दे दिये। दूसरे पराधीन देशों की तरह यहाँ भी

असली लाभ के कारबार तो प्रायः सभी विदेशियों के हाथ में हैं। इसलिये साधारण जनता में बड़ी ग़रीबी है। किसान बेचारे बड़ी मेहनत करते हैं। लेकिन बेचारे अपनी मेहनत का पूरा फल नहीं भोगने पाते हैं। आपस में संगठन न होने और होड़ रहने के कारण पहले तो कम से कम किराया स्वीकार कर लेते हैं। फिर पीछे से पेट भरने के लिये उन्हें किसी न किसी बहाने से कुछ और माँगने की ज़रूरत रहती है इसी से मुझे इस मिस्री की भोलीभाली बात से उस पर और उसके देश पर बड़ा तरस आया। लेकिन फिर अपने देश की दशा को याद कर मन ही मन लज्जित रह गया।





यात्रा

(२)

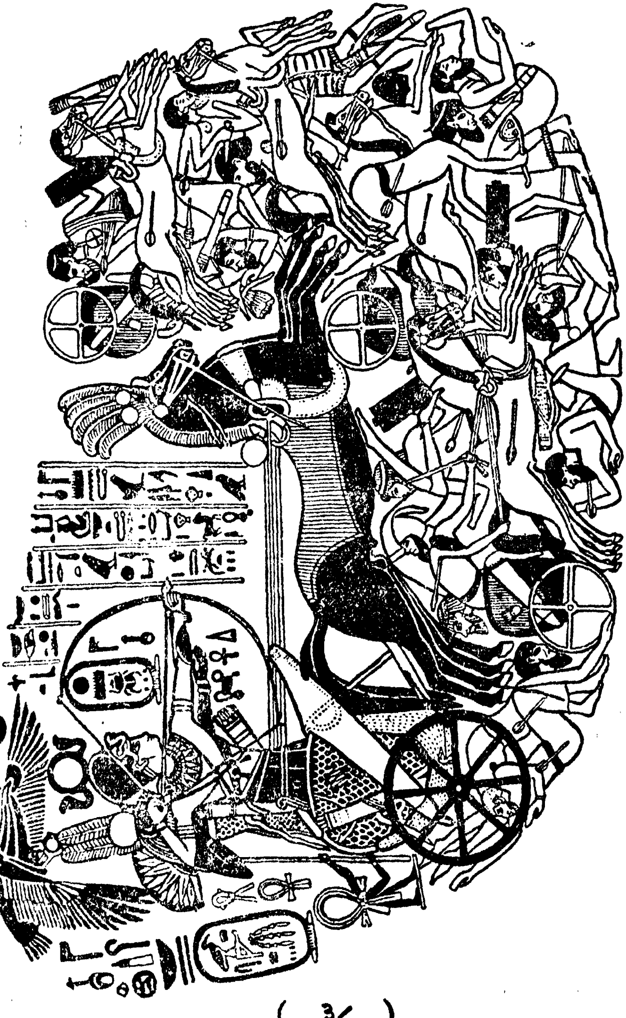
केरो के २४ मील उत्तर में डेल्टा बराज या बाँध है। यहाँ रेल या मोटर से लगभग पौन घंटे में यात्री पहुंच सकता है। इस बाँध के बनाने में लगभग १५ लाख पौंड लग गये। लेकिन इसके बन जाने से डेल्टा के उपजाऊ भाग में सिंचाई का पूरा प्रबन्ध हो गया। बाँध ऐसे स्थान पर बना है जहाँ से नील नदी की रोज़ेटा और डेमेटा धारायें फटती हैं। बाँध के पास ही सुन्दर पार्क है। यहाँ लोग अक्सर छुट्टी मनाने आया करते हैं। यहीं एक सिंचाई सम्बन्धी अजायबघर है। इसमें दुनिया भर के प्रसिद्ध बांधों के माडल (नमूने) बने रक्खे हैं। इस बाँध को देखकर हरिद्वार की याद आ जाती है।

केरो से रेल द्वारा फयूम नखलिस्तान एक दिन में अच्छी तरह देखा जा सकता है। अल्बस्ता जंकशन पर गाड़ी बदलनी पड़ती है। लगभग दो घंटे में सारी यात्रा पूरी हो जाती है। आने-जाने में तीसरे दर्जे के २० पियास्टर (१०० पियास्टर = १ मिस्री पौंड = १५ रु०) खर्च होते हैं। फयूम अरबी नाम है। पहले यूनानी लोग

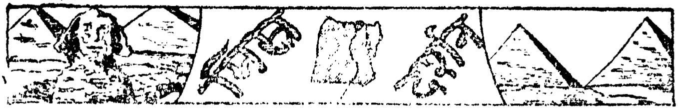
इसे क्राकोडिलो पोलिस (ग्राह नगर) या मगर का शहर कहते थे। यहाँ मगर देवता के समान पूजा जाता था। आज-कल फयूम शहर इसी नाम के ज़िले का प्रधान नगर है। अल्वस्ता से आने पर बीच में कुछ दूर तक विकराल रेगिस्तान पड़ता है जहाँ हरियाली और पानी का नाम नहीं है। पर फयूम के पास पहुंचने पर सारा दृश्य ही बदल जाता है। नील की एक नहर यहाँ होकर बहती है। शहर के मकान नहर के दोनों ओर बने हैं। नहर के किनारे छायादार पेड़ हैं। बीच बीच में पुल है। एक पुल के पास मोटर-गाड़ियों का अड्डा है। यहाँ से मोटर गाड़ियाँ केरो और दूसरे स्थानों को जाया करती हैं। खरबूजा, ककड़ी, तरबूज आदि फलों के बेचने वाले मिस्री हैं। बंक और दूसरे कारबार के मालिक इटेलियन और दूसरे विदेशी हैं। इस ज़िले का क्षेत्रफल लगभग ८५० वर्गमील है पर इसकी काली धुँधली मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। सब कहीं मक्का, ज्वार कपास, भिन्डी, केला के हरे खेत हैं। गेहूँ काटा जा रहा है। बीच बीच में फसल और मुसाफिरों को लाने के लिये हलकी रेलवे बनी है। गाँवों के धुँधले घर

कच्ची ईंटों के बने हैं। इनकी छतों पर अक्सर कंडा, ईंधन और चारे का ढेर रक्खा रहता है। फलाही किसान कुरसीनुमा मोढ़े पर बैठ कर दाँय चलाते हैं। छोटे छोटे लड़के नहर के चिकने किनारों पर फिसल कर पानी में नंगे नहाते हैं। नंगे नहाने की इधर कुछ चाल सी है। बड़े लोग भी पाजामा किनारे पर रख कर एक दूसरे की ज़रा आँख बचाकर नहर में नंगे ही नहाते हैं।

केरो और समीपवर्ती स्थानों को देख कर मैंने ऊपरी मिस्र और सूडान के लिये तयारी की। सूडान जाने के लिये सूडान ऐजेन्ट का पर्मिट (आज्ञापत्र) लेना पड़ता है। इस दफ़्तर में बड़ी धाँधली है। कई बार चक्कर काटने के नाद कहीं दफ़्तर के लोग मिले। इस बार अफ्रीका के भिन्न भिन्न भागों के हबशियों की यहाँ बड़ी भीड़ लगी थी। हबशी लोग अपने सिरों पर छोटा अँगौछा बाँधे हुए थे। वे बहुत ही ढीलाढाला लम्बा कुरता पहने हुए थे जो पैर को एड़ी तक लटकता था। अधिक पैसे वाले हबशी लोग दो तीन और अधिक साफ कुरते पहने हुए थे। पढ़े लिखे लोग बेंचों पर बैठे थे। शेष फर्श पर ही इधर-उधर बैठे थे। इस यात्रा में अधिकतर यही लोग मेरे साथी होने वाले थे। मुझे ऐसा

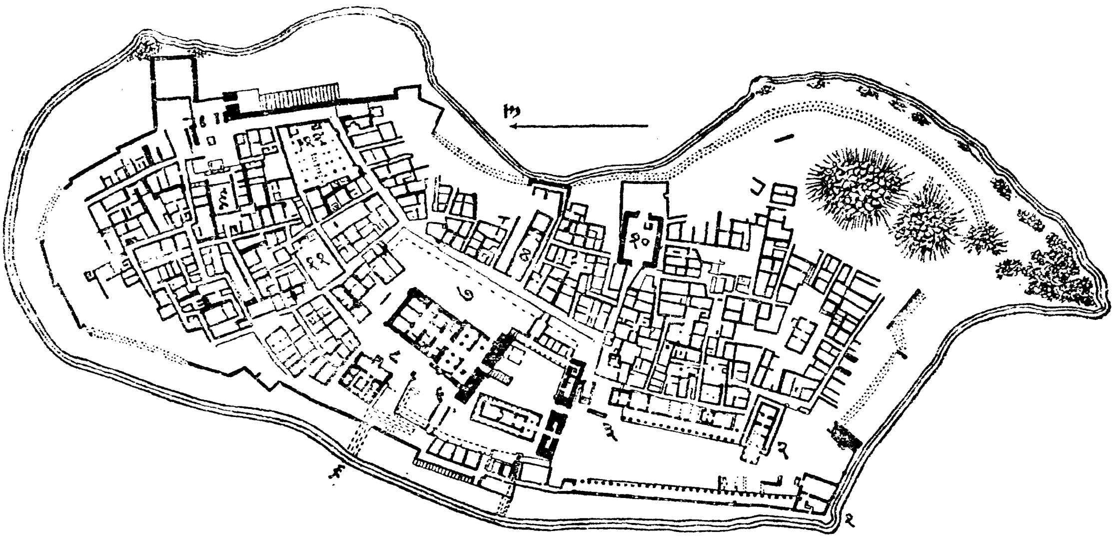


हाथर्मोज़ (चतुर्थ) अपने रथ से बैरियों का पीछा कर रहा है। (अजायबघर का एक दृश्य)

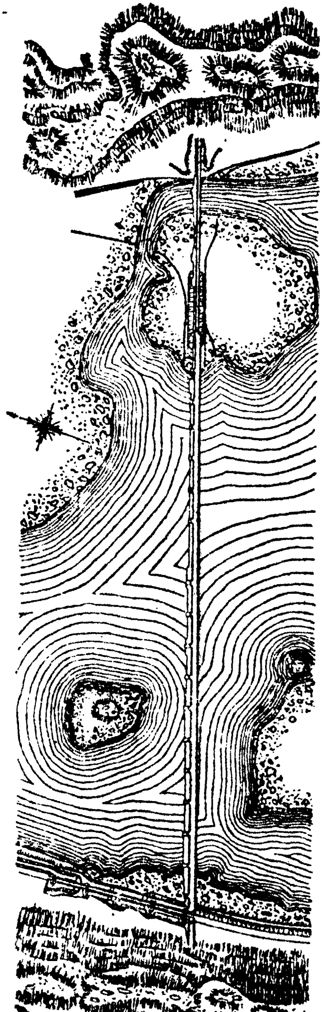


जान पड़ा कि यहाँ रिश्वत का बाज़ार ख़ूब गरम है। मुझे फार्म तो मिल गया लेकिन मुझसे कहा गया कि पर्मिट पाने के लिये यह ज़रूरी है कि कोई बड़ा आदमी मेरे लौट आने की ज़िम्मेदारी ले जिससे सूडान की सरकार को वापिस भेजने में ख़र्च न उठाना पड़े। मैंने उन्हें बहुत कुछ समझाया कि मैं केवल सैर करने के लिये जा रहा हूं। मैंने उन्हें ट्रेविलर्स चेक और बैंक की चिट्ठी दिखाकर विश्वास दिलाना चाहा कि मेरे पास सफर के लिये काफी पैसा है। उनकी सरकार को मेरे लिये कुछ भी ख़र्च नहीं करना पड़ेगा।

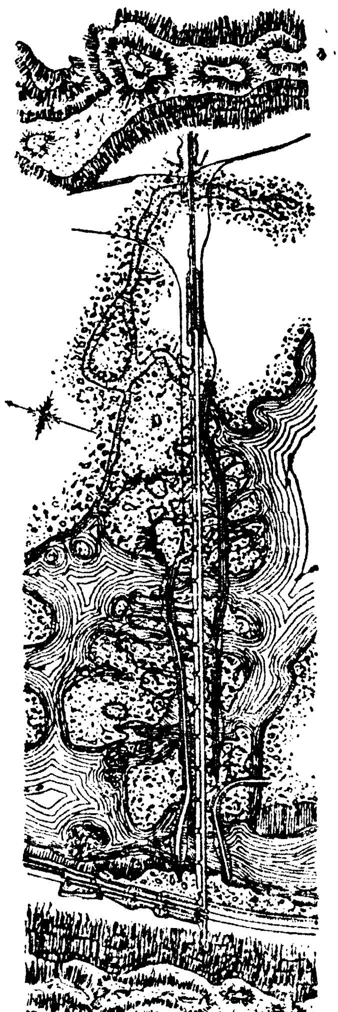
यूँ तो केरो शहर में रहने वाले एक प्रतिष्ठित हिन्दुस्तानी सज्जन से मेरी अचानक भेंट हो गई थी जो कई लाख के मालिक हैं। हीरा-जवाहरात की उनकी दुकान योरुपीय ढंग की है। लेकिन उनका हृदय हिन्दुस्तानी है। पर मैं यह नहीं चाहता था कि मैं ऐसे छोटे काम के लिये उनको कष्ट दूँ। अतः मैं टामसकुक के दफ़्तर में गया। वहाँ से मैं एक दिन पहले ट्रेविलर्स चेक भी खरीद चुका था। पहले मैंने उनके यहाँ से वापिसी टिकट खरीदनी चाही लेकिन वे दूसरे दर्जे से कम की



१—ने काटने बस (द्वतीय) का मन्दिर
२—अरि प्रेस नेफर का मन्दिर
३—इ एम-हेडेप
४—हाठोर का मन्दिर
५—हड्डियों का फाटक
६—कैपर का मन्दिर
७—इसिस का मन्दिर
८—हेरु-नेच-टेफ का मन्दिर
९—निलोमीटर
१०—कियोयस्क
११—गिरजा



नीलनदी का पानी घट जाने पर
अस्वान के पास बाँध का मानचित्र



नील नदी का पानी बढ़ने पर
अस्वान के पास बाँध का मानचित्र

टिकट नहीं बेचते हैं। इसलिये मैंने उनके यहाँ १० पौंड जमा करके एजेन्ट के नाम एक चिट्ठी इस बात की ले ली कि ज़रूरत पड़ने पर वापिसी टिकट वे दे देंगे। इस बार पर्मिट में कोई अड़चन न पड़ी।

६ जून को सबेरे आठ बजे की गाड़ी से मैंने अस्वान के लिये प्रस्थान किया। ८८ पियास्टर में टिकट मिला। आधा पियास्टर कुली ने लिया। लेकिन १ पियास्टर वह मेरी खरीज से टिकट बाबू को भी दे आया। यहाँ तीसरे दर्जे की खिड़की पर बड़ी भीड़ रहती है। लेकिन सामने वाली पहले और दूसरे दर्जे की खिड़की खाली सी रहती है। इस पर टिकट लेने वालों को तीसरे दर्जे का टिकट तो मिल जाता है। लेकिन १ पियास्टर टिकट बाबू को देना पड़ता है। इस खुल्लमखुल्ला फीस को यहाँ के लोग रिश्वत नहीं समझते हैं। ठीक आठ बजे गाड़ी छूटी। रेल की खिड़की से शहर की शान कुछ भी ठीक समझ में नहीं आती है। नील नदी का पुल बड़ा सुहावना लगता है। यहाँ से ईंटों के भट्ठों की चिमनियाँ दिखाई देती हैं। हरे खेतों में गुड़ाई हो रही थी। कुछ खेतों में गेहूँ पका खड़ा था। कहीं कहीं गेहूँ गाहा ज

रहा था। कटे हुए खेतों में खाद दी जा रही थी। कुछ खेत काटे जा रहे थे। गधा, भैंस, ऊँट, गाय, बैल और भेड़ रेल की खिड़की से अक्सर नज़र आते थे। कहीं कहीं एक आध बबूल भी दिखाई देता है लेकिन खजूर और छुहारे की सब कहीं प्रधानता है। आगे बढ़ने पर कपास बहुत मिलती है। दूसरा स्थान ज्वार, बाजरा का है। गिज़ा के पिरामिड पहरेदार की भाँति दूर तक दिखाई देते रहते हैं।

जगह जगह पर देहाती स्त्रियाँ खेतों में काम करती मिलती हैं। वे काले कपड़े की चादर और लम्बा बाँह वाला झूला पहनती हैं। उनका माथा और ठुड्डी नीली गुदी रहती है। उनमें परदा बिल्कुल नहीं होता है। कहीं कहीं छुहारे के बगीचों के बीच में कपास और गेहूँ के खेत मिलते हैं। खेतों में मेड़ नहीं के बराबर होती है लेकिन मेड़ पर छुहारे के पेड़ों की पंक्ति एक खेत को दूसरे खेत से अलग करती है। आगे बढ़ने पर नील की घाटी या बसे हुए मिस्र देश की पूर्ण चौड़ाई रेल की खिड़की से दिखाई देती है। रेल के दाहिनी ओर नहर है। नहर से लगी हुई मोटर की सड़क है जिसमें शीशम और बबूल के पेड़ों की छाया है। बाईं ओर शान्त नील

नदी है। नीची उपजाऊ घाटी के दोनों ओर सहारा रेगिस्तान का ऊँचा किनारा दिखाई देता है। यदि नील

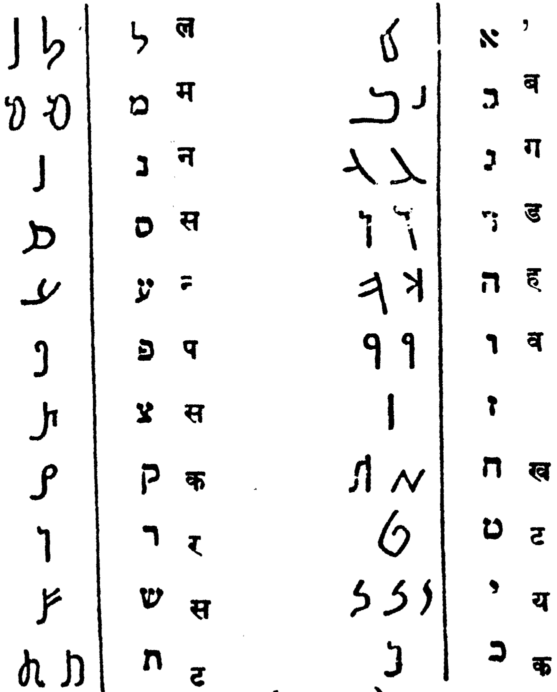
प्राचीन मिस्री वर्णमाला





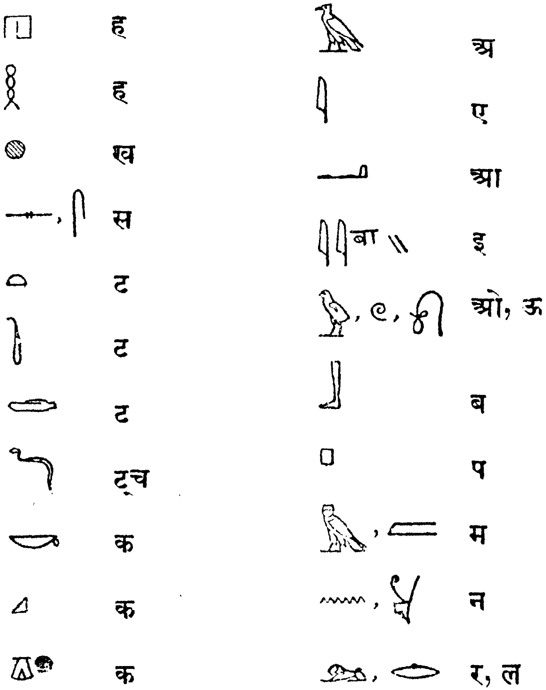
नदी अपना मार्ग बदल दे तो तंग काली घाटी कुछ ही दिनों में सहारा की बालू से भर जावे और आबाद मिस्र देश का पता भी न चले। मिस्र देश को नील का वरदान क्यों कहते हैं यह बात यहाँ भली भाँति समझ में आ जाती है।

बनाटी वर्णमाला और मिस्री वर्णमाला



देश दर्शन

बनी यूसफ काफी बड़ा क़स्बा है। यहीं पुराने हीनन सूतेन शहर के भग्नावशेष हैं। पास ही नील नदी का घाट है जहाँ नदी में चलाने वाले स्टीमर ठहरा करते हैं। रेल की लाइन के दोनों ओर चार मंजिला ऊँचे मकान हैं। बिबा में पेट्रोल की टंकियाँ और फलों के

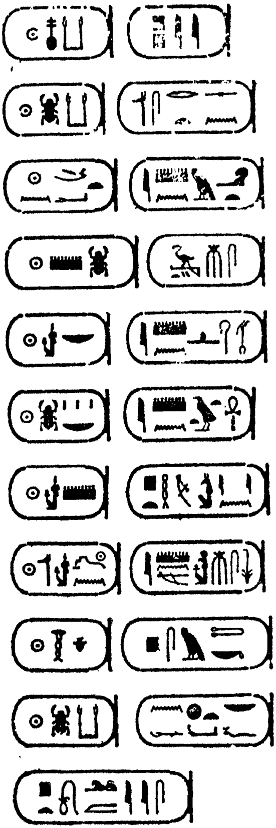


बगीचे दूर से ही दिखाई देने लगते हैं। फ़शेन स्टेशन के पास नील के दूसरी ओर की पहाड़ियाँ एकदम सपाट हो जाती हैं। इधर नहर की चौड़ाई भी बढ़ जाती है।

मताई में नहर का झाल है। देरूत में दो बड़े झाल हैं जिनसे तीन रजबाहे निकले हैं। इसके आगे घाटी की चौड़ाई बहुत ही कम रह जाती है। दोनों ओर सहारा के ऊँचे वीरान किनारे खड़े हैं। इधर एस्यूत एक बड़ा नगर है। शहर कुछ आलीशान है पर शहर के बाहर गाँव में छोटे छोटे झोपड़े मिलते हैं। इतने में तीन दीवारें और छोटी छत होती है। ये सब के सब बाजरा के सूखे पौधों के बने होते हैं। जहाँ इस समय एस्यूत शहर है वहीं पहले मिस्र देश का प्राचीन सौत शहर था। इस शहर का इष्टदेव अनूबिस था। उसका सिर शृङ्गाल का था। आजकल एस्यूत शहर ऊपरी मिस्र का सब से बड़ी ब्यापारिक मंडी है। यहाँ दूर दूर से माल बिकने आता है। यहीं एक अमरीकन मिशन कालेज है। जहाँ पहले गधों का अस्तबल था और पाँच लड़के किसी तरह पढ़ा करते थे वहीं अब एक विशाल कालेज है जहाँ ७०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इनमें

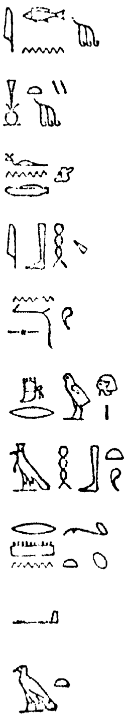
देश दर्शन

प्राचीन मिस्री राजाओं तथा उनके लड़के लड़कियों और रानियों को पदवियां होती थीं। बाईं ओर उन पदवियों की लिखावट का नमूना दिया जाता है।

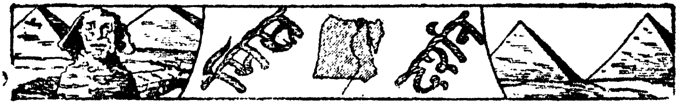


पदवी	(हिन्दी में)
	नेफेरकेरी
	खेपेरकेरी
	नेमाएटरी
	मेनखेपेरी
	नेबमाएटरी
	नेबखेपरूरी (नतमखानेम)
	मेनमाएट्री
	युसेरमाएट्र
	वाहिब्री
	खेपरकेरो
	प्टोमाइस

प्राचीन मिस्री लिखावट का नमूना



शब्द	हिन्दी
आन	चमड़ा
शेन्टी	बाल
फेन्ट	नाक
अबेह	दाँत
नेस	जीभ
स्वेरू	सिर की
नेहेबेट	गला
एसेन्ट	कन्धा
आ	बांह
अट	पीठ



५०० विद्यार्थी बोर्डिङ्ग हाउस में रहते हैं। एस्यूत के पश्चिम में पुरानी गुफायें हैं जिन्हें ईसाइयों ने कुछ बिगाड़ दिया।

एस्यूत में ही नील नदी पर एक बड़ा बाँध है। अस्वानी के बाद ऊपरी मिस्र में यही सब से बड़ा बाँध है। इसकी चौड़ाई २६६० फ़ुट है। यहीं से प्रसिद्ध इब्राहीमिया नहर निकलती है जो यहाँ से २०० मील उत्तर की ओर बहती हुई मध्य मिस्र और फयूम को सींचती है। एस्यूत से कुछ पहले नहर पर रेल का पुल पड़ता है। एस्यूत के आगे गिरगा में प्याज बहुत होती है। नागहमादी में नील नदी पर फिर एक बाँध है। इसके ठीक सामने ओसिस जंकशन से एक रेलवे लाइन पश्चिम की ओर खरगा मन्दिर को गई है। नागहमादी स्टेशन के पास ही एक मज़बूत पुल से ऊपर से रेल नील नदी को पार करती है।

—★—

यात्रा

[३]

अभी तक रेल नदी के बायें किनारे किनारे चलती थी। नागहमादी से अस्वान (शल्लानदी) तक वह नदी के दाहिने किनारे से चलती है। बीच में लुक्सर और कार्नक के प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर हैं। इन्हें देखने के लिए मैं गाड़ी से उतर गया।

रात को जेन्स होटल में ठहरा। यहाँ केरो से कहीं अधिक गरमी थी। इस लिये रात को होटल की छत पर सोया। यहाँ से सारे नगर नील नदी और पड़ोस की पहाड़ियों का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। जहाँ आजकल वर्तमान लुक्सर शहर है वहीं पुराने समय में प्राचीन थीबीज़ शहर था। यह नगर ऊपरी मिस्र की राजधानी थी। इसके दोनों ओर चौड़ा उपजाऊ मैदान है। बीच में नील नदी है। मैदान के दोनों सिरों पर कई पहाड़ियां इसकी रक्षा करती हैं। इसी से थीबीज़ नगर राजधानी होने के योग्य था। उस समय शहर के १०० बड़े बड़े दरवाज़े थे। यहाँ २०,००० युद्ध के रथ थे। अब से



३००० वर्ष पहले मन्दिरों, महलों, उद्यानों और बाज़ारों, शिक्षकों, कारीगरों और सिपाहियों से थीबीज़ की शोभा और महिमा बड़ी अपूर्व थी। शहर १२ मील के घेर में बसा हुआ था। नील नदी के दाहिने किनारे पर सब बसे हुए लुक्सर और कारनक शहर के भग्नावशेष इस समय भी यात्री को दंग कर देते हैं। अपने गौरव के समय में इनका क्या हाल रहा होगा इसका कुछ अनुमान इनके भग्नावशेषों से लगाया जा सकता है। लुरसर का विशाल मन्दिर बलुआ पत्थर का बना हुआ है। यह अब से साढ़े तीन हज़ार वर्ष पहले बनाया गया था। मन्दिर ५०० फुट लम्बा और १८० फुट चौड़ा है। यहाँ से कारनक तक पवित्र सड़क जाती थी। कारनक में कई राजवंशों के बनवाये हुए स्फिंक्स और स्तम्भ हैं। बीच के १२ खम्भों में हर एक खम्भा एक एक समूची शिला का बना है। खम्भा ६० फुट ऊँचा है। हर एक का घेर ३५ फुट है। उनके इर्द-गिर्द १२२ खम्भे हैं जो ४० फुट ऊँचे और २७ फुट घेर के हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ और भी बहुत से विशाल भग्नावशेष हैं।

देश दर्शन

नील नदी के बायें या पश्चिमी किनारे पर इतने भग्नावशेष हैं कि उनको देखने में कई हफ़्ते लगाये जा सकते हैं। यहाँ करना का मन्दिर सम्राट शमसेर प्रथम की स्मृति में बनाया गया था।

राजाओं के मक़बरे ठोस चट्टानों को काटकर पहाड़ी की तलहटी में बनाये गये। मक़बरों का आकार (ढाँचा) प्राचीन मिस्रियों ने अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार नियत की। इन लोगों का विश्वास था कि मरने के बाद ज़ीवात्मा इन अँधेरी कोठरियों में ही होकर गुज़रता है। ये कोठरियाँ मिस्र देश के समानान्तर हैं। इनके बीच में होकर एक नदी बहती है। इन अन्धकारमय कोठरियों में तरह तरह के भयानक जन्तुओं का कोलाहल होता रहता है। ये जन्तु यहाँ होकर जाने वाले जीवात्मा पर हमला करते हैं। इस यात्रा में १० घंटे लगते थे। हर रात को सूर्य भगवान (रा-देवता) भी रथ पर सवार हो इधर से जाते हैं। इसलिये यदि कोई जीवात्मा सूर्य-भगवान के रथ के साथ हो ले तो वह निश्चय ही प्रकाशमय और आनन्दपूर्ण जगत में पहुँच जावे। इस सफलता के लिये

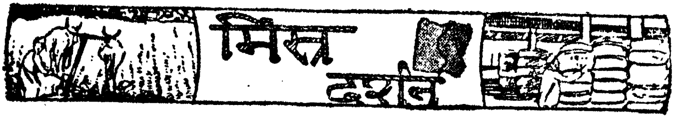
जीवात्मा को एक मन्त्र पढ़ना पड़ता था जिसकी दीक्षा यहाँ के पुजारी लोग देते थे। आजकल भीतर जीने के लिये बिजली लगा दी गई है। इससे यात्री प्राचीन कारीगरी और सभ्यता को भली भाँति समझ सकते हैं।

मक़बरे छोटे-बड़े हैं। जिस राजा ने सब से अधिक समय तक राज्य किया उसका मक़बरा सब से बड़ा बन सका। सब से कम समय तक शासन करने वाले राजा का मक़बरा सब से छोटा रह गया। इस प्रकार इन मक़बरों के आकार से राजाओं के शासनकाल का पता एकदम लग जाता है। तूतनखाम के मक़बरे में जो हीरा जवाहरात और साज के सामान मिले हैं उनसे आजकल का सभ्य संसार एकदम चकित हो गया। ये सब केरो के अजायबघर में देखे जा सकते हैं। रानियों और दरबारियों के मक़बरे अलग हैं।

आजकल लुक्सर छोटा ही नगर है। पर यह बहुत साफ है। यहाँ सरदी के दिनों में बहुत से अमरीकन यात्री आते हैं। उनके लिये यहाँ बहुत से होटल हैं। गरमी के दिनों में यात्रा कम हो जाती है और नगर कुछ

सुनसान सा हो जाता है। लुक्सर के प्राचीन स्थानों को देखकर मैंने यहाँ के कुछ चित्र मोल लिये। मेरे पास १५) रु० का मिस्री नोट था। दुकानदार के पास खरीज नहीं थी। लेकिन मेरा ड्रैगोमैन (पथ-प्रदर्शक) उसे जानता था इसलिये मैंने ड्रैगोमैन को नोट दे दिया और दुकानदार पीछे से दाम लेने को राज़ी हो गया। नोट भुनाने पर उसने २) रुपये अपनी फीस के और अधिक झटक लिये। मिस्र के साधारण लोग तो सीधे-सादे और अच्छे हैं। लेकिन गाइड लोग बड़े ठग हैं। मेरी गाड़ी आने का समय निकट था। इसलिये नील में स्नान कर मैं स्टेशन पर पहुँचा और थोड़ी ही देर में अस्वान के लिये चल दिया।

प्रातःकाल आठ बजे लुक्सर से प्रस्थान करके मैं लगभग २ बजे अस्वान पहुँच गया। अस्वान नगर केरो से ५८७ मील और लुक्सर से १३७ मील दूर है। यह मार्ग अधिकतर खुश्क है। देखने योग्य प्राचीन स्थान भी कम हैं। केवल गसना, एदफू और कोम-ओम्बो में



प्राचीन मन्दिर है। एसना स्टेशन के पास नील नदी में सिंचाई का भी बाँध बना है।

अस्वान नगर लुक्सर की तरह नील के पूर्वी किनारे पर बसा है। लिबिया के सूखे पहाड़ों के सामने अस्वान का दृश्य बड़ा अच्छा लगता है। यहीं पर नदी का प्रथम प्रपात है जिससे नावों के मार्ग में रुकावट पड़ती थी। आजकल नहर से इसमें सहायता मिलती है। प्राचीन समय में अस्वान नगर और भी अधिक बढ़ा-चढ़ा था। यहाँ हाथी और दूसरे जानवर बहुत बिकते थे। आजकल अस्वान मिस्र देश में सब से बड़े बाँध के लिये प्रसिद्ध है। बाँध देखने के लिये स्टीम लाँच से जाना बड़ा अच्छा रहता है। बाँध (डैम) की लम्बाई लगभग डेढ़ मील है। बाँध का एक चौथाई भाग ठोस है। इस भाग में दरवाज़े नहीं हैं। शेष भाग में १८० दरवाज़े हैं। बाँध की औसत उँचाई ३५ मीटर (१ मीटर = गज़ ३$\frac{3}{8}$ इंच) और अधिक से अधिक उँचाई ४४ मीटर है। इसकी मुटाई ३० मीटर और चौड़ाई ११ मीटर है। ६ झाल ८० मीटर लम्बा है जिनमें होकर साल भर नावें

चल सकती हैं। इस बाँध से जो जलागार बनता है वह ३६० किलो मीटर लम्बा है। बाढ़ के बाद हर साल १० नवम्बर से जलागार का भरना आरम्भ हो जाता है। १५ मार्च से वह खाली होने लगता है। १५ जुलाई तक वह एकदम खाली हो जाता है। मई के अन्त में नदी का तल सब से अधिक नीचा और सितम्बर के आरम्भ में सब से अधिक ऊँचा होता है। १६०२ ई० में बाँध की नींव पड़ी थी। आजकल यह फिर ऊँचा किया जा रहा है। इसके बनने में ६०,००,००० मिस्री पौंड खर्च हुए। पर इससे मिस्र देश की खेती को बड़ा लाभ हुआ।

—:०❀०:—

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़्वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—वोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डिगामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।